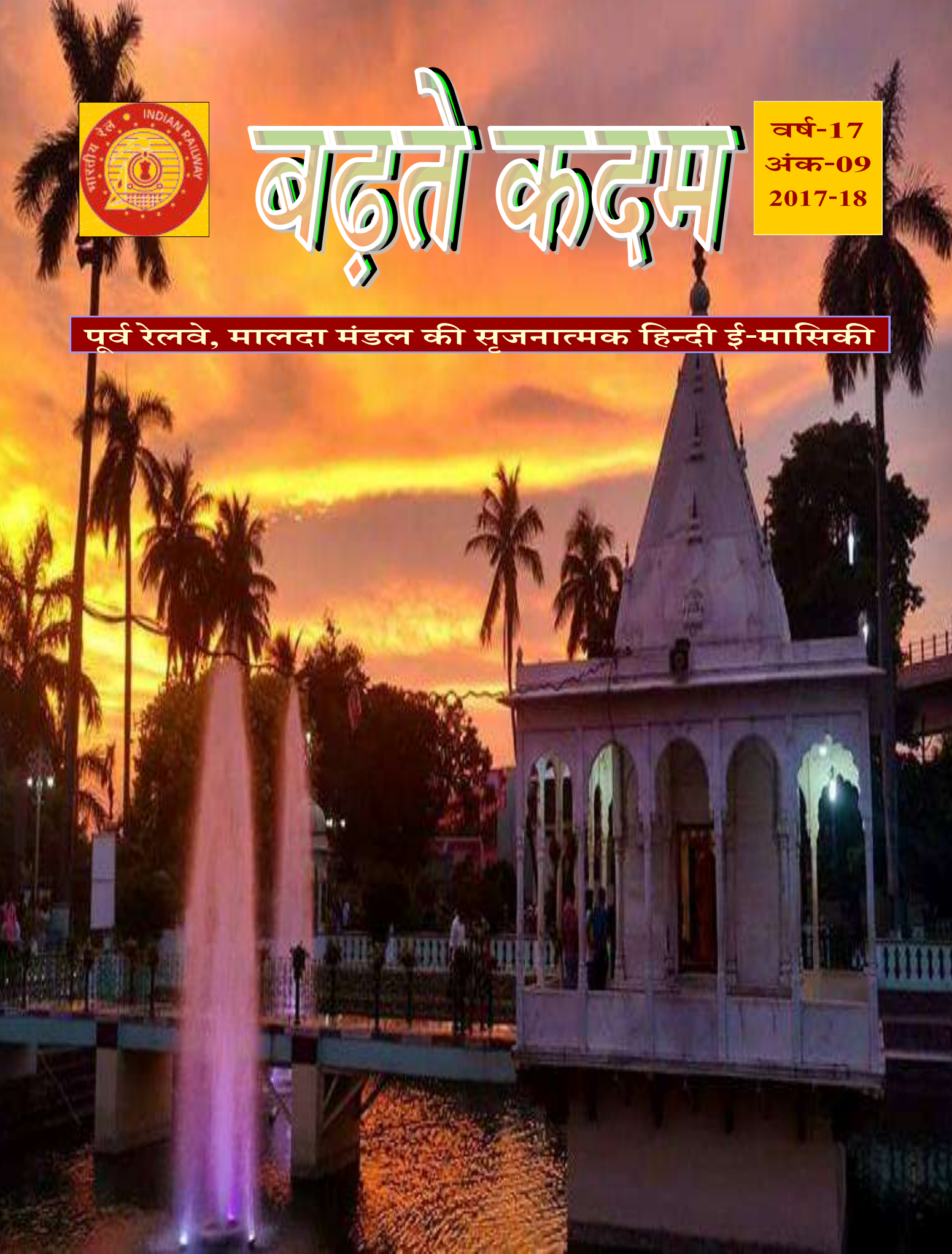




बाढ़ते कदम

वर्ष-17
अंक-09
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



भारत के संविधान में राजभाषा

राजभाषा नियम, 1976
(यथासंशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

6. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

- (1) कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।
- (2) जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।
- (3) यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

- (1) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।
- (2) केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।
- (3) यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।
- (4) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
—सुधांशु कुमार विश्वास —	3
अनूठा पर्व छठ पूजा —	
— सच्चिदानंद	4
भेंटवार्ता—	
— कैलाश चंद धारिया	7
रेलवे नियंत्रण ...—	
— अरूण कुमार झा	9
बुद्ध की शिक्षा	
— इन्द्रज्योति राय	13
कलयुगी भक्त —	
— चंद्रभान	14
गठियाका इलाज	
जनार्दन प्रसाद	16
गांधी..	
— पूजा धारिया	17
स्वच्छता	
— मोनिका	17
पानी.....	
—नंदलाल प्रसाद आनंद	18
नेता बनो	
— शैलेन्द्र राम	18
छाया चित्र	19
चित्र विथिका	20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)
Email – rajbhasha.malda@gmail.com

सामवेदः भारतीय संस्कृति का आधार

वेद भारतीय संस्कृति का आधार है। वेद भारतीय सभ्यता को विरासत में मिले हैं अगर किसी ग्रंथ ने भारत की गरिमा को अक्षुण्ण रखा है तो वो हैं वेद। वेदों ने भारत के आध्यात्म को सर्वोत्तम उंचाई प्रदान की है।

वेदों में चार वेद प्रमुख माने जाते हैं। ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद और सामवेद। इन चारों वेदों में से सामवेद भारत के प्राचीनतम वेदों में से एक है। यह वेद मूलतः गीत-संगीत प्रधान है। प्राचीन आर्यों द्वारा साम-गान किया जाता था।

सामवेद यद्यपि छोटा है परन्तु एक तरह से यह सभी वेदों का सार रूप है और सभी वेदों के चुने हुए अंश इसमें शामिल किये गये हैं। इसके 1875 मन्त्रों में से 69 को छोड़ कर सभी ऋग्वेद के हैं। केवल 17 मन्त्र अथर्ववेद और यजुर्वेद के पाये जाते हैं। फिर भी इसकी प्रतिष्ठा सर्वाधिक है, जिसका एक कारण गीता में कृष्ण द्वारा वेदानां सामवेदोऽस्मि जो कहा है।

सामवेद संहिता के दो भाग हैं, आर्चिक और गान। पुराणों में जो विवरण मिलता है उससे सामवेद की एक सहस्र शाखाओं के होने की जानकारी मिलती है।

सामवेद का महत्व इसी से पता चलता है कि गीता के अतिरिक्त अनुशासन पर्व में भी सामवेद की महत्ता को दर्शाया गया है- सामवेदश्च वेदानां यजुषां शतरुद्रीयम्। अग्नि पुराण के अनुसार सामवेद के विभिन्न मंत्रों के विधिवत जप आदि से रोग व्याधियों से मुक्त हुआ जा सकता है एवं बचा जा सकता है, तथा कामनाओं की सिद्धि हो सकती है।

सामवेद ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग की त्रिवेणी है। ऋषियों ने विशिष्ट मंत्रों का संकलन करके गायन की पद्धति विकसित की। अधुनिक विद्वान् भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि समस्त स्वर, ताल, लय, छंद, गति, मन्त्र, स्वर-चिकित्सा, राग, नृत्य, मुद्रा, भाव आदि सामवेद से ही निकले हैं।

सामवेद में ऐसे मन्त्र मिलते हैं जिनसे यह प्रमाणित होता है कि वैदिक ऋषियों को ऐसे वैज्ञानिक सत्त्यों का ज्ञान था जिनकी जानकारी आधुनिक वैज्ञानिकों को सहस्राब्दियों बाद प्राप्त हो सकी है।

सामवेद की लोकप्रियता एवं उपयोगिता के आधार पर हमारे अनेक ऋषि इसके पाठक बन गए और बाद में आगे चलकर उनकी संततिया सामवेदी ब्राह्मण कहलाने लगे।

— सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	कैलाश चंद्र धारिया व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय एवं दयामय दास

अनूठा पर्व छठ पूजा

विश्व का अनूठा पर्व छठ पूजा कई नामों से विख्यात है। जैसे डाला छठ बड़का पर्व, लोक महापर्व, लोक आस्था का महापर्व। इस पर्व की शुरुआत भगवान कृष्ण के पुत्र ने कुष्ठ से निवारण हेतु सर्वप्रथम सूर्य पूजा यानी छठ पूजा प्रारंभ किया था। आज यह पर्व भारत ही नहीं विदेशों में भी बड़ी श्रद्धा से किया जाता है। जहां-जहां बिहारी भाई गए और बस गए वहां वहां छठ पूजा करने लगे।

दरअसल यह सूर्य देव की पूजा है और सूर्य सबका है। सूर्य उदय न हो तो इस संसार का नाश हो जाएगा। अतएव सूर्य को जीवित देवता माना जाता है। सूर्य उदय न हो तो मानव, पशु पक्षी से लेकर कीट पतंग तथा पेड़ पौधे सब का विनाश हो जाएगा अतएव सूरज को जीवित देवता माना जाता है। आज हम सैकड़ों देवी देवता की पूजा करते हैं परंतु किसी भी देवी देवता को साक्षात् नहीं देखते उनका चित्र या मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं जबकि सूर्य देव को हम लोग प्रत्यक्ष देखते हैं उन से लाभान्वित होते हैं। ठंड लग रही है सूरज की धूप में बैठ जाते हैं, गीला कपड़ा जल्दी सुखाना हो तो कपड़े धूप में डाल देते हैं। इस प्रकार पृथ्वीवासी सूरज का साक्षात् दर्शन रोज सुबह शाम करते हैं तथा इससे लाभान्वित होते हैं इसीलिए छठ पूजा का महत्व सबसे अधिक है छठ पूजा के अनेकों लाभ हैं जो निम्न प्रकार है -- छठ पूजा समाज में व्याप्त जाति धर्म मजहबी भाव को समाप्त करता है तथा आपस में जोड़ता है।

छठ पूजा रोजगार उपलब्ध कराता है। छठ पूजा समाज से ब्राह्मण बाद समाप्त करने की सीख देता है। छठ पूजा मिट्टी तथा जल के महत्व को बताता है। छठ पूजा समाज में सबसे अधम डोम जाति के महत्व को स्थापित करता है। समाज में गलत प्रसाद प्रथा के प्रति सजग करता है जैसे खिचड़ी तथा मांस को भी प्रसाद के रूप में खाने खिलाने की प्रथा चल पड़ी है।

छठ पूजा समाज में व्याप्त ऊंच-नीच छोटे-बड़े अमीर गरीब शिक्षित मूर्ख का भेद मिटाता है। छठ पूजा समूह में सब के साथ मिलजुलकर मनाने की प्रेरणा देता है। छठ पूजा कन्या के महत्व को दर्शाते हुए बेटी की मांग व्रती सूर्य देव से करती है। छठ पूजा अपनी सुविधानुसार तथा आर्थिक स्तर के अनुसार करने की स्वतंत्रता लोगों को बिना आडंबर के करने की सीख देती है। छठ पूजा बाहरी आडंबर दूर कर गरीब अमीर सबको पैदल चलने की सीख देती है। छठ पूजा माथे पर सूप, डलिया ढोकर श्रम करने के लिए प्रेरित करता है। छठ पूजा मिलजुल कर सफाई करने के लिए प्रेरित करता है। छठ पूजा जाति धर्म का भेद भाव भूलाकर समाज को उपयोगी शिक्षा देता है। छठ पूजा गौ माता की महत्ता स्थापित करता है क्योंकि इसके दूध का इस्तेमाल प्रसाद तथा अर्घ्य में होता है।

छठ पूजा त्याग करने तथा आवश्यकता पड़ने पर बिना अन्न जल ग्रहण कर जीने की शिक्षा देता है। छठ पूजा संतोषम् परम् सुखम् के साथ साथ क्षमा त्याग सफलता का पाठ पढ़ाता है।

छठ पूजा की प्रमुख सामग्री बांस की बनी सूप, टोकरी, देवरा, दउरा है जो बंशवृद्धि का प्रतीक है तथा अपने जीवन में जैसे सूप अनुपयोगी चीज भूसा को अलग करती है वही सीख हमें छठ पूजा अपने अंदर की बुराइयों को दूर करने की प्रेरणा देती है। छठ पूजा में उपयोग में लाई जाने वाली दूसरी वस्तु मिट्टी है अर्थात् पृथ्वी जिस पर यह संसार बसा हुआ है पहाड़, नदी, झरने, स्कूल, कॉलेज सब कुछ धरती माता पर बसा हुआ है। इसी मिट्टी से छठ पूजा के लिए दिया तथा बर्तन और प्रसाद बनाने हेतु चूल्हा बनाया जाता है। मानव का जीवन भी मिट्टी से ही बना है इसमें भी प्राण रूपी बाती जलता है और वह जब तक जलता है तब तक मानव जीवित रहता है जैसे दिए का बुझना निश्चित है उसी प्रकार मनुष्य का मरना एक दिन निश्चित है तो फिर अभिमान कैसा यह छठ पर्व संदेश देता है। छठ पूजा और अन्य पूजा में बहुत अंतर है --

प्रमुख अंतर है हम सूर्य देव को, जल देव को, पवन देव को, आकाश देव को स्वयं अपने आंखों से देखते हैं जबकि अन्य पूजा में हम भगवान की मूर्ति स्थापित करते हैं या उसका काल्पनिक स्वरूप की पूजा करते हैं। छठ पूजा का आयोजन खुले मैदान में बहते झरने, तालाब या नदी के किनारे मनाते हैं। व्रती निर्मल जल में प्रवेश कर सूर्य की आराधना करते हैं।

छठ पर्व मानव को सदाचार का पाठ पढ़ाती है। आसपास के लोगों को भी आवश्यकतानुसार अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार मदद करने का संदेश देता है। धर्म की दीवार तोड़ने का संदेश देता है क्योंकि सूर्य देवता पूरे संसार के जीव का कल्याण करते हैं। क्योंकि इस पर्व को चाहे हिंदू हो या मुसलमान सभी पूजा अर्चना करते हैं या करने में सहायता देते हैं इससे आपस में बैमनस्यता खत्म होती है भाई चारा बढ़ता है। मेरा मानना है कि यदि छठ पूजा जैसी दो चार और होती है तो विश्व से नफरत खत्म हो जाएगी।

छठ पूजा में कितने लोगों को रोजगार मिलता है उनके द्वारा निर्मित सामानों का उपयोग जो होता है इसीलिए इस सर्वश्रेष्ठ पर्व को बड़का पर्व कहा जाता है जो पर्व में सबसे बड़ा है जिसे 3 दिनों तक निराहार रहकर किया जाता है। छठ पूजा ही एक ऐसी पूजा है जिसमें ब्राह्मण की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। यदि इस पर्व में ब्राह्मण की आवश्यकता पड़ती तो विदेशों से भी ब्राह्मण बुलाने पर पूजा संपन्न नहीं हो पाती अर्थात् उतने ब्राह्मण उपलब्ध ही नहीं हो पाते अतः छठ पर्व ब्राह्मणवाद पर कुठाराघात करता है और स्वयं अपनी इच्छा अनुसार अपनी भाषा में भगवान भास्कर की पूजा अर्चना करने की छूट देता है। भगवान अंतर्दामी होते हैं वह सब के मन की बात जानते हैं तो फिर ब्राह्मण की क्या आवश्यकता। किसी भी पूजा पाठ में ब्राह्मण की सचमुच आवश्यकता ही नहीं यही सीख छठ पर्व देता है।

आज समाज में प्रसाद का गलत स्वरूप खाने खिलाने की प्रथा चल पड़ी है। हर पर्व के अंत में खिचड़ी प्रसाद के रूप में पाई जाती है जो सरासर गलत परंपरा है। दरअसल खिचड़ी दरिद्रों, भिखारियों को शुरू-शुरू में पूजा आयोजकों ने खिलाना शुरू किया था। धीरे-धीरे भिक्षु गायब हो गए और स्वयं सुखी संपन्न व्यक्ति भिखारियों का हक चट करने लग गए और पाप से बचने के लिए इसे प्रसाद घोषित कर दिए जब कि सच्चाई यह है कि हिंदू धर्मानुसार किसी भी प्रसाद में यदि नमक मिला दिया जाए तो वह प्रसाद नहीं हो सकता। इसका उदाहरण आप छठ पूजा में देख सकते हैं।

छठ पूजा में प्रसाद के अंतर्गत खीर, पायस, मिठाई, फल आदि आते हैं। छठ पर्व तालाब या नदी किनारे गरीब से गरीब, अछूत धनी से धनी सभी आपस में बिना भेदभाव के पूजा-पाठ करते हैं। विश्व में ऐसा एक भी पर्व नहीं है जिसमें इतनी समता हो इसीलिए समाज से छुआछूत गरीब अमीर विद्वान जैसे भेदभाव मिटाने में ही छठ पर्व का विशेष महत्व है। आज चारों तरफ बेटियों पर अत्याचार हो रहा है भ्रूण हत्या से लेकर तिलक लोभियों के कारण कुमारी अमला अपने प्राणों की आहुति देने पर विवश है और इस छठ पर्व में बेटा नहीं बेटा की मांग व्रती सूर्यदेव से करती है। चाहे गरीब हो या अमीर इसमें बाहरी आडंबर नहीं होता लोग अपने माथे पर स्वयं डाला सूप ढोकर घाट तक जाते हैं और सभी व्रती नंगे पांव जाते हैं जो समता एकरूपता प्रदान करता है तथा छठ पर्व के देवता श्रम की महत्ता को बताता है। अन्य धर्म के लोग भले ही छठ पूजा न करते हो लेकिन इसमें शामिल होकर रास्ता घाट की सफाई में अहम भूमिका निभाते हैं।

छठ पर्व जाति-भेद मिटाता है मिटाने की प्रेरणा देता है। छठ पूजा में गौ माता तथा उसका दूध से ही प्रसाद की सारी सामग्री बनती है। गोबर से घर लीपा जाता है तथा दूध से खीर बनाया जाता है तथा दूध से खीर बनाकर छठ पूजा का शुभारंभ किया जाता है।

छठ पूजा हमें बताता है कि छठ पूजा में डूबते सूरज के साथ साथ उगते सूरज की भी पूजा की जाती है जबकि लोग उगते सूरज अर्थात् सुख के वक्त ही उन्नति करने वाले या धनी जन की ही समाज में सम्मान मिलता है। छठ पर्व हमें संदेश देता है कि चाहे दुख हो या सुख समान रूप से मनुष्य को जीवन यापन पूजा पाठ करना चाहिए। छठ पूजा करने के पहले

लोग लहसुन, प्याज तथा मांस मछली का त्याग कर अपना घर, परिवार, शरीर शुद्ध करता है तथा पूरे ब्रह्मचर्य पूर्वक रहकर छठ पर्व मनाता है अर्थात् छठ पूजा बलि प्रथा का विरोध करता है निरामिष खाने की प्रेरणा देता है सदाचार अपनाने की प्रेरणा देता है। छठ पूजा अकेले नहीं समूह में अन्य लोगों की सहायता से पूर करने की प्रेरणा देता है जो संयुक्त परिवार को बनाए रखने की सीख देता है। संयुक्त परिवार की महत्ता को बताता है। छठ पूजा से हमें ज्ञान होता है कि जरूरत पड़ने पर धन मान सम्मान ही नहीं अन्न जल भी छोड़ा जा सकता है। मानव संसार में कल्याण के लिए आता है। ऐसा कल्याणकारी लोक पर्व आस्था का महापर्व छठ पूजा इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम ही होगा क्योंकि यह छठ पर्व अनेकता में एकता विविधता में एकता सही जीवन जीने की प्रेरणा देता है समाज में भाईचारा स्थापित करता है बाहरी आडंबर का नाश करवाता है और सच्चा मानव बनाने में छठपूजा अहम भूमिका निभाता है।

छठ पर्व अकेला अनूठा महापर्व है जिसे सब लोग मिल जुलकर मनाते हैं और प्रसाद मिल-जुलकर खाते भी हैं 36 घंटा निर्जला व्रत शायद इस पृथ्वी पर अकेला एकमात्र छठ पूजा ही है जिसे स्त्री पुरुष सभी कर सकते हैं बिना किसी पुरोहित के इस पर्व का मिशाल मिलना असंभव है। छठ पर्व मानव को सही ढंग से जीने की कला सिखाती है मेरे ख्याल से छठ पूजा सिर्फ सूरज पूजा नहीं है। इस पर्व में सूर्य के साथ साथ पवन देव, अग्नि देव, वरुण देव पृथ्वी देव, आकाश देव, अन्न देव तथा अन्य देवों का सम्मिलित पूजन किसी न किसी रूप में होता है इसीलिए इसे षष्ठी छठ पूजा कहा जाता है जो युक्तिसंगत तो है ही। उपयुक्त देवता मानव पशु-पक्षी के लिए कुछ-न-कुछ जीने के लिए देता है इस के सहयोग के बिना मानव का जीना कठिन नहीं असंभव होगा तथा मृत्यु पश्चात इन्हीं के सहयोग से मानव की देह पुनः उन्हीं में विलीन हो जाएगा।

छठ पर्व के सूर्य देव को माता कहे या पिता छठ मैया कहे या छठ बाबा कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि ईश्वर को देवता को मनुष्य ने दोनों रूपों में ग्रहण किया है तभी तो कहते हैं त्वमेव माता च पिता त्वमेव बंधुश्च सखा ...वह अर्थात् ईश्वर हमारा माता पिता बंधु सखा सब कुछ है फिर चाहे हम छठ मैया कहे या छठ बाबा कोई फर्क नहीं पड़ता। माता हमें जन्म देती है लालन-पालन करती है अतएव माता और मातृभूमि के प्रति हमारा अधिक लगाव होने के कारण हम माता को अधिक महत्व देते हैं इसीलिए प्रायः लोगों को भूल बस या आदतन कहते सुना जाता है काली मैया की जय दुर्गा मैया की जय के साथ-साथ विश्वकर्मा मैया की जय गणेश मैया की जय क्योंकि यह हमारे माता पिता दोनों हैं। इतना पवित्र तथा श्रद्धा के बावजूद छठ पूजा की समाप्ति के दिन या उस के दूसरे दिन भक्त तथा व्रती मांस मछली पर टूट पड़ते हैं जो सरासर अनैतिक कार्य है। ऐसी भक्ति से लाभ नहीं होता भगवान भास्कर प्रसन्न इसलिए नहीं होते। वर्ष 2015 में दिनांक 17. 11.2015 को सूर्य देव ने दो बजे दिन से ही गायब हो गये थे। दूसरे दिन को प्रातः 8:00 बजे सूर्य देव प्रकट हुए। दोनो ही दिन बिना सूर्य देव के दर्शन के ही पूजा समाप्त करने पर विवश हो गए। मेरे ख्याल से इसी मांस मछली के लिए ललायित होने के कारण खासकर पश्चिम बंगाल और बिहार के संबंध में मैं कह रहा हूँ पश्चिम बंगाल में तो मैंने प्रत्यक्ष देखा तथा बिहार के बारे में दूरभाष पर ज्ञात हुआ यह घोर आश्चर्य की बात है छठ पूजा करने वाले परिवार 1 सप्ताह पहले लहसुन प्याज खाना बंद कर देता है परंतु छठ समाप्त होते ही मछली मांस पर टूट पड़ता है। यह है न विरोधाभास वाली बात। इसीलिए ऋषि मुनियों ने इसे खाने से परहेज किया है कर्म का फल मिलना निश्चित है तथापि मेरा सभी छठ व्रतियों से सादर अनुरोध है कि कम से कम जब तक आपके घर में छठ पूजा का प्रसाद है तब तक मांस मछली का खाना बंद करें। तो आइए छठ पूजा की पवित्र आस्था को बनाए रखने हेतु सभी छठ व्रती तथा उनके परिवार के सदस्य इस पावन अवसर पर संकल्प लें कि जब तक हमारे घरों में छठ पूजा की कोई भी सामग्री जैसे ठेकुआ फल आदि रहेगा तब तक हम मांस मछली का सेवन नहीं करेंगे। न स्वयं करेंगे न दूसरों को करने देंगे। तभी छठ मैया की सार्थकता सिद्ध होगी अन्यथा यह एक ढकोसला दिखावा बन कर रह जाएगा। इसी कामना केसाथ छठ मैया को शत-शत नमन

अशोक कुमार हलदर, गार्ड, पूर्व रेलवे, मालदा से एक भेंटवार्ता

श्री हलदर यद्यपि एक गार्ड हैं और अपने कार्य के प्रति निरंतर सचेष्ट रहते हैं तथापि इन्होंने अपने सेवाकाल में विभिन्न कठिनाइयों को पार करते हुए अनेक पुस्तकें लिखी हैं। इनकी योग्यता को देखते हुए इन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।



श्री अशोक कुमार हलदर पूर्व रेलवे के मालदा मंडल में मेल एक्सप्रेस ट्रेन के गार्ड हैं। रेलवे में कार्य करते हुए भी इन्होंने भाषा, साहित्य एवं अध्यात्म के ऊपर पुस्तकें लिखी हैं इनके सराहनीय कार्यों को मद्देनजर रखते हुए विभिन्न संगठनों द्वारा पुरस्कृत किया गया है। श्री कैलाश चन्द्र धारिया, वरिष्ठ अनुवादक की इनसे हुई एक भेंट वार्ता के कुछ अंश प्रस्तुत हैं।

कैलाशजी— आप मेल/एक्सप्रेस ट्रेन के गार्ड के अतिरिक्त एक अच्छे लेखक भी हैं, लेखन कर्म की प्रेरणा आपको कहां से प्राप्त हुई ?

हलदरजी — यह सच है कि हम गार्ड कर्मचारियों का कार्य शैली में बहुत ही व्यस्तता होती है, इसके बावजूद भी मैं सुबह शाम अध्ययन करता हूं, मुझे स्व अध्ययन करने की प्रेरणा मेरे माता पिता गुरु जी एवं डॉ बाबासाहेब अंबेडकर से प्राप्त हुई। मैं जो भी साहित्य में पढ़ता हूं उनके ऊपर मनन भी करता हूं और जो विचार प्रमुख रूप से सामने आते हैं उन्हें कागज पर लिख देता हूं।

कैलाशजी — आप किस प्रकार के लेख लिखते हैं ?

हलदरजी — विशेषकर उपन्यास लिखता हूं। उपन्यासों की थीम लाचार, गरीब, अपोषित एवं उपेक्षित मानव जाति के पात्र रहते हैं। साहित्य समाज का दर्पण है जो चीज घटित होती है वही चीज मैं अपने उपन्यासों की सहायता से समाज, देश, विश्व के सामने प्रकट करने की चेष्टा करता हूं।

कैलाशजी— रेलवे में आप पिछले 31 वर्ष से गार्ड के पद पर कार्यरत हैं किस-किस प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ा?

हलदरजी — संघर्ष ही जीवन है। किसी भी कर्म को पूर्ण करने में परेशानियां तो आती ही हैं परंतु हमें उनका सामना हिम्मत एवं साहस के साथ करना चाहिए। वैसे तो सभी गार्डों को ड्यूटी के दौरान अंधेरी रातों को अकेले अपने डिब्बे में बैठ कर तय करना पड़ता है। इस परिस्थिति में लुटेरों, बदमाशों एवं जंगली जानवरों का भय रहता है बल्कि गर्मी, ठंड और मच्छरों का सामना भी करना पड़ता है। मैंने हमेशा हिम्मत और साहस के साथ अपनी माल गाड़ियों को सुरक्षित पहुंचने के लिए निरंतर प्रयास किया है।

कैलाशजी— रेलवे में सुधार लाने के लिए आप क्या सुझाव देना चाहेंगे ?

हलदरजी — मैं चाहता हूं कि सरकार की प्रथम प्राथमिकता सुरक्षा और संरक्षा होनी चाहिए। अभी भी रेलवे के अधिकांश ट्रैक बहुत पुराने हैं और डिरेलमेंट की संभावना बनी रहती है। कमजोर पुलों की मजबूती पर भी रेलवे को उचित ध्यान देना चाहिए। रेलवे हमारी जीवन रेखा है। हमको इसकी सुरक्षा एवं संरक्षा का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। वैसे तो बहुत सी कमियां हैं जिन पर नजर रखते हुए कम से कम लागत पर अधिक से अधिक आउटकम हो इस पर ध्यान देना चाहिए।

कैलाशजी— आप रेल कर्मचारियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

हलदरजी — रेलवे के सभी कर्मचारियों को ईमानदारी, मुस्कुराते हुए जनता की सेवा करनी चाहिए। जब सभी कर्मचारियों अपने अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा के साथ करेंगे तो निश्चित रूप से रेलवे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा।

कैलाशजी— आप हिंदी अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान रखते हैं, भाषाओं को सीखने की प्रेरणा कहां से प्राप्त हुई ?



हलदरजी — हमारा देश एक विशाल देश है यहां पर अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। अनेक धर्मों का पालन होता है। हम कह सकते हैं कि भारत की सामासिक संस्कृति ही हमारी प्रेरणा का स्रोत है। सभी प्रकार की संस्कृतियों को समझने की जिज्ञासा से ही भाषाओं को सीखने की प्रेरणा मिलती है। इसी प्रकार अलग-अलग क्षेत्रों में जाने के कारण अलग अलग भाषाओं को जानने वाले लोगों से बात होती है। इससे प्रेरित हो कर मैंने भाषाओं को सीखने की दिशा में प्रयत्न किया

कैलाशजी— आप बच्चों एवं नवयुवकों को क्या संदेश देना चाहते हैं ?

हलदरजी — मैं चाहता हूं कि सभी बच्चे स्वस्थ एवं शिक्षित हों। उनमें बड़ों का आदर करने की भावना हो। वे अनुशासित हो तथा समय के साथ-साथ चलते हुए नई-नई तकनीकों एवं कौशलों को सीखने के लिए प्रयत्नशील रहें। अपने देश का हर बच्चा अपने माता पिता का ध्यान रखे और अपने देश का नाम रौशन करने के लिए तत्पर रहे

प्रस्तुति — कैलाश चंद्र धारिया

रेलवे नियंत्रण कक्ष की कार्यशैली

1853 की छुक छुक करती रेल आज भाप इंजन से भी जल और विद्युत इंजन से निरंतर उच्च गति को प्राप्त करती जा रही है। माल एवं यात्री परिवहन में हम निरंतर नए आयाम प्रस्तुत करते जा रहे हैं। भविष्य में भी हमें नई चुनौतियों का सामना करते हुए प्रगति करना है।

हिंदुस्तान की सबसे बड़ी संस्था की व्यवस्था और परिचालन बड़े ही सुनियोजित ढंग से होती है और इसके लिए मंडल जोन एवं बोर्ड स्तर पर नियंत्रण कक्ष बने होते हैं। साधारण जनता यहां तक कि बहुत से रेलकर्मियों कंट्रोल शब्द को जानते हैं परंतु कंट्रोल के पूरे सिस्टम और उसके महत्व से अपरिचित है। आइए आज मैं रेलवे नियंत्रण कक्ष की कार्यशैली वहां की गतिविधि और उसके दायित्वों की चर्चा



करते हुए वहां कार्यरत नियंत्रकों की मनोस्थिति पर भी प्रकाश डालने का प्रयास कर रहा हूं।

रेलवे का नियंत्रण कक्ष कंट्रोल रूम वस्तुतः रेलवे परिचालन का मस्तिष्क है जिसके निर्णय एवं निर्देशानुसार गाड़ियों का परिचालन होता है। नियंत्रण कक्ष के कार्यों को मिलता तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

योजना बनाना, कार्यान्वयन करना, समीक्षा करना

प्रत्येक मंडल में सबसे महत्वपूर्ण उसका नियंत्रण कक्ष होता है जो रेलवे प्रशासन को क्षेत्रीय ईकाइयों से जोड़ता है। नियंत्रण कक्ष से ही क्षेत्रीय ईकाइयों को निर्देश जारी किया जाता है और उन ईकाइयों से परिणाम, वहां समस्याओं को रेलवे प्रशासन तक पहुंचाया जाता है जो सशक्त दूरभाष व्यवस्था से अनवरत जुड़ी हुई होती है। यह एक अहर्निश व्यवस्था है जो सालों भर दिन रात बिना छुट्टी के अबाध रूप से चलती रहती है। नियंत्रण कक्ष का मूल उद्देश्य रेल के संसाधन का योजनाबद्ध तरीके से महत्तम परिणाम प्राप्त करना है जिसे विभिन्न सांख्यिकीय मापों में प्रदर्शित किया जाता है जैसे-

- नेट टन किलोमीटर / वैगन डे
- ग्रॉस टन किलोमीटर / वैगन डे
- इंजीनियरिंग किलोमीटर
- वैगन टर्न अराउंड
- इंजीनियरिंग टर्न अराउंड

इंजन यूटिलाइजेशन
ट्रैक यूटिलाइजेशन
पैसेंजर किलोमीटर इत्यादि

इन्हीं सांख्यिकीय पैमानों के आधार पर किसी मंडल जॉन यहां तक की रेलवे बोर्ड के परिणाम की विवेचना की जाती है। नियंत्रण कक्ष का प्रधान अधिकारी मुख्य नियंत्रक होता है जिनके साथ अनेक मुख्य नियंत्रक, सेक्शन नियंत्रक और इनका सहयोग करने के लिए अनेक लिपिक स्तर के कार्मिक होते हैं।

नियंत्रण कक्ष में परिचालन नियंत्रकों के लिए पूरा मंडल विभिन्न छोटे-छोटे खंडों में बंटा होता है और वह किसी एक खंड नियंत्रक द्वारा नियंत्रित किया जाता है। प्रत्येक खंड के अंतर्गत एक खास संख्या में स्टेशन होते हैं जो सशक्त दूरभाष व्यवस्था के द्वारा नियंत्रण कक्ष से अनवरत जुड़े होते हैं। इस खंड में चलने वाली सभी गतिविधियों को खंड नियंत्रक के अनुसार चलना पड़ता है और स्टेशन मास्टर उनके आदेशानुसार रेल का परिचालन करते हैं और उन्हें हर वक्त सूचित करते रहते हैं।

नियंत्रण कक्ष में परिचालन के अलावा अन्य विभागों के भी नियंत्रक हर वक्त उपस्थित रहते हैं जो परिचालन में निरंतर सहयोग करते हैं। यह भी अपने-अपने क्षेत्रीय इकाइयों से जुड़े रहते हैं और परिचालन की आवश्यकता अनुसार उन्हें निरंतर निर्देश देते हैं जैसे- वाणिज्य नियंत्रण, विद्युत नियंत्रण, इंजीनियरिंग नियंत्रण, संकेत व दूरसंचार नियंत्रण, सुरक्षा नियंत्रण, शक्ति नियंत्रण एवं सवारी एवं माल डिब्बा नियंत्रण। ये सभी सिस्टर कंट्रोल कहलाते हैं।

इन सबों की सामान्य गतिविधियों के अलावा किसी भी असामान्य स्थिति में परिचालन के सूचना पर त्वरित गति से उसका समाधान करने के लिए तत्पर हो जाते हैं।

आइए, अब हम रेलवे नियंत्रण कक्ष की आंतरिक कार्य प्रणाली की चर्चा करें ताकि यह समझ में आए की विभिन्न पदों पर काम करने वालों का दायित्व और कर्तव्य क्या है ?

प्रमुख नियंत्रक-

यह पूरे नियंत्रण कक्ष का प्रशासनिक एवं परिचालनिक कार्यों का सर्वश्रेष्ठ पदेन पर्यवेक्षक होता है। यह वरिष्ठ परिचालन प्रबंधक का दाहिना हाथ माना जाता है। यह पूरे टीम का नेतृत्व करते हुए सवारी एवं माल डिब्बों के परिचालन में मंडल की उपलब्धियों को महत्तम स्तर तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत रहता है। नियंत्रण के सारे कार्य इन्हीं के नेतृत्व में किए जाते हैं।

मुख्य नियंत्रक कोचिंग एवं गुड्स-

यह दोनों क्षेत्रों में परिचालन के शीर्षस्थ पद होता है। इनके ही नेतृत्व और निर्देशानुसार मंडल में गाड़ियों का परिचालन होता है। यूं कहें तो इनके प्लानिंग से ही गाड़ियों का चक्का घूमता है।

इनका मुख्य उद्देश्य रेल के उपलब्ध संसाधन जैसे — इंजन, गाड़ियों, ड्राइवर, गार्ड एवं अन्य कर्मचारी तथा उपलब्ध रास्ते का महत्तम उपयोग कर मंडल के लोडिंग-अनलोडिंग एवं इंटर चेंजिंग के कमिटमेंट को पूरा करना है। इनके असीमित दायित्वों में कुछ प्रमुख निम्न हैं —

- ⇒ माल गाड़ियों के परिचालन सुनिश्चित करना।
- ⇒ विभिन्न स्टेशनों जहां माल गाड़ियों की लोडिंग होती है वहां आवश्यकतानुसार बैगन एवं रैक भेजने की व्यवस्था करना।
- ⇒ सही इंजन ड्राइवर एवं गार्ड की व्यवस्था करना।



- ⇒ विभिन्न स्टेशनों पर लोड वैगनों एवं रैक को गन्तव्य स्थान पर भेजने की व्यवस्था करना ।
- ⇒ ट्रांसशिपमेंट पॉइंट पर मैचिंग रैक सप्लाय करना एवं उन्हें पुनः उचित जगह चलाना ।
- ⇒ मंडल से होकर गुजरने वाली माल गाड़ियों को कम से कम समय में मंडल से बाहर चला देना ताकि इंटर चेंजिंग कमिटमेंट को पूरा किया जा सके ।
- ⇒ **NTPC** एवं विभिन्न कारखानों के अधिकारियों के संपर्क में रह कर उनके यहां की आवश्यकतानुसार लोडेड और खाली वैगन वाले रैकों के परिचालन की व्यवस्था करना ।
- ⇒ मंडल में रेल पथ एवं विद्युत ट्रैक्शन के रखरखाव का कार्य निरंतर प्रक्रिया है इसके लिए उचित माल डिब्बे इंजन एवं ब्लॉक की जरूरत होती है । अतः इसकी व्यवस्था एवं संबंधित विभाग एवं कर्मचारियों को पूर्व सूचित करना ताकि उनके कर्मचारी या श्रमिकों की समय पर व्यवस्था हो सके ।
- ⇒ विभिन्न शेडो एवं सिक लाइनों में इंजन के निस्तारण की व्यवस्था करना ।
- ⇒ पैसेंजर एवं मेल एक्सप्रेस गाड़ियों के परिचालन में शत प्रतिशत पालन करने के लिए विभिन्न खंड नियंत्रकों की मदद करना ।
- ⇒ परिचालन के समय अनेक समस्याएं आती है जो अलग-अलग विभागों से संबंधित होती हैं ऐसे समय उन विभागों के नियंत्रण कक्ष की मदद से स्थानीय इकाइयों को सक्रिय कर समस्या को यथाशीघ्र दूर किया जाता है।
- ⇒ दुर्घटना के समय उनकी भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है । यह दुर्घटना स्थल एवं अगल-बगल के स्टेशनों पर गाड़ियों के परिचालन को नियंत्रित कर देते हैं ।

खंड नियंत्रक

पूरा मंडल और संपूर्ण रेलपथ को अनेक खंडों में विभक्त किया जाता है जो अलग अलग खंड नियंत्रकों के अधीन रहकर कार्य करता है। प्रत्येक खंड में अनेक स्टेशन होते हैं जो सशक्त दूर संचार व्यवस्था के नियंत्रण कक्ष द्वारा जुड़े होते हैं। नियंत्रण कक्ष में रिंग की व्यवस्था रहती है ताकि खंड नियंत्रक किसी भी समय किसी भी स्टेशन को बुला सके। स्टेशन भी जब चाहे नियंत्रक के संपर्क में रह सकता है।

खंड नियंत्रण कक्ष में उनके खंड में आने वाले सभी स्टेशनों के डायग्राम बने होते हैं। सामने कंप्यूटर स्क्रीन पर खंड नियंत्रक गाड़ियों का परिचालन करते रहते हैं और इनके निर्देशानुसार स्टेशनों में विभिन्न गाड़ियां चलती रहती हैं।

खंड नियंत्रण ही गाड़ियों के क्रॉसिंग एवं प्रीसिडेंस की व्यवस्था करता है और इसमें मुख्य नियंत्रक विभिन्न सलाह एवं निर्देश देते हैं और खंड नियंत्रक की सहायता भी करते हैं।

वस्तुतः मालगाड़ियों एवं सवारी गाड़ियों का परिचालन या अन्य सभी कार्य का असल कार्यान्वयन खंड नियंत्रक के द्वारा ही होता है। विभिन्न ब्लॉक, वैगन की सप्लाई, इंटरचेंज कमिटमेंट, दुर्घटना के समय परिचालन या मंडल जोन एवं रेलवे के विभिन्न सांख्यिकीय उपलब्धियां इन्हीं खंड नियंत्रकों के सफल सक्षम एवं निरंतर प्रयास का परिणाम है।

परिचालन विभाग के अलावा अन्य विभागीय नियंत्रण की हमने चर्चा की थी जिन्हें सिस्टर कंट्रोल कहा जाता है। हर विभाग का अपना अपना कक्ष होता है जहां उस विभाग के प्रतिनिधि या नियंत्रक चौबीसों घंटे मौजूद रहते हैं। यह सभी नियंत्रक दूर संचार व्यवस्था के द्वारा आपस में जुड़े होते हैं। परिचालन विभाग द्वारा प्राप्त किसी भी समस्या में ये तुरंत सक्रिय हो जाते हैं। अपने अधिकारी को सूचित कर क्षेत्रीय कार्यों को तुरंत निर्देश देकर उनका समाधान ढूंढते हैं।

इस तरह हम कह सकते हैं कि पूरा नियंत्रण कक्ष एक टीम की तरह काम करती है जो अपने अहर्निश सेवा द्वारा सवारी एवं मालगाड़ी के क्षेत्र में महत्तम सांख्यिकी परिणाम प्राप्त करने के लिए तत्पर रहते हैं।

आपने कभी भी नियंत्रकों को किसी सभा धरने यह जुलूस के हिस्से के रूप में नहीं देखा होगा। वस्तुतः इनके पास इतना अधिक दायित्व होता है कि इन्हें सभी कार्यों के लिए समय ही नहीं मिलता। वस्तुतः मां भारती के सच्चे सपूत पूरी तन्मयता से अपने कर्तव्य का निर्वहन करने में लगे रहते हैं इसीलिए दक्षिण रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी के मिश्र ने नियंत्रकों को साइलेंट सोल्जर्स की संज्ञा दी है।

— अरुण कुमार झा, मुख्य नियंत्रक, मालदा

◆ हम किसी भी चीज को पूर्णतः ठीक तरीके से परिभाषित नहीं कर सकते। अगर ऐसा करने की कोशिश करें तो हम भी उसी वैचारिक पक्षाघात के शिकार हो जायेंगे जिसके शिकार दार्शनिक होते हैं।

— रिचर्ड फ्रेनिमैन

◆ सभ्यता की कहानी, सार रूप में, इंजिनियरिंग की कहानी है - वह लम्बा और विकट संघर्ष जो प्रकृति की शक्तियों को मनुष्य के भले के लिये काम कराने के लिये किया गया।

— एस डी कैम्प

बुद्ध की शिक्षा

विश्व के प्रसिद्ध धर्म सुधारकों एवं दार्शनिकों में अग्रणी महात्मा बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं के आधार पर बौद्ध धर्म की स्थापना की। चाइना, जापान, श्रीलंका समेत 10 से अधिक देशों में बौद्ध धर्म फैला हुआ माना जाता है। पेश हैं भगवान बुद्ध के वह 12 वचन जो अपनाने से आपको जीवन में सफलता और शांति मिलेगी। । ।

कहते हैं बुद्ध को जब ज्ञान हुआ तो वह सात दिन चुप रह गए। चुप्पी इतनी मधुर थी। ऐसी रसपूर्ण थी, ऐसी रोआं-रोआं उसमें नहाया, सराबोर था, बोलने की इच्छा ही न जागी। बोलने का भाव ही पैदा न हुआ। कहते हैं, देवलोक थरथराने लगा। कहानी बड़ी मधुर है।

कहते हैं, ब्रह्मा सभी देवताओं के साथ बुद्ध के सामने मौजूद हुए। वे उसके चरणों में झुके। हमने देवत्व से भी ऊपर रखा है बुद्धत्व को। सारे संसार में ऐसा नहीं हुआ। हमने बुद्धत्व को देवत्व के ऊपर रखा है। कारण है देवता भी तरसते हैं बुद्ध होने को।

बुद्धत्व के चरणों में ब्रह्मा झुके और कहा- आप बोलें! आप न बोलेंगे तो महा दुर्घटना हो जाएगी। और एक बार यह सिलसिला हो गया, तो आप परंपरा बिगाड़ देंगे। बुद्ध सदा बोलते रहे हैं। उन्हें बोलना ही चाहिए। जो न बोलने की क्षमता को पा गए हैं, उनके बोलने में कुछ अंधों को मिल सकता है, अंधेरे में भटकतों को मिल सकता है। आप चुप न हों, आप बोलें।

भगवान बुद्ध के वह 12 वचन जो अपनाने से आपको जीवन में सफलता और शांति मिलेगी।

- ◆ किसी जंगली जानवर की अपेक्षा एक कपटी और दुष्ट मित्र से ज्यादा डरना चाहिए, जानवर तो बस आपके शरीर को नुकसान पहुंचा सकता है, पर एक बुरा मित्र आपकी बुद्धि को नुकसान पहुंचा सकता है।
- ◆ स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है, वफादारी सबसे बड़ा सम्बन्ध है।
- ◆ घृणा, घृणा करने से कम नहीं होती, बल्कि प्रेम से घटती है, यही शाश्वत नियम है।
- ◆ तुम अपने क्रोध के लिए दंड नहीं पाओगे, तुम अपने क्रोध द्वारा दंड पाओगे।
- ◆ हजारों खोखले शब्दों से अच्छा वह एक शब्द है जो शांति लाये।
- ◆ सभी गलत कार्य मन से ही उपजाते हैं। अगर मन परिवर्तित हो जाय तो क्या गलत कार्य रह सकता है।
- ◆ अतीत पर ध्यान केन्द्रित मत करो, भविष्य का सपना भी मत देखो, वर्तमान क्षण पर ध्यान केन्द्रित करो।
- ◆ वह व्यक्ति जो 50 लोगों को प्यार करता है, 50 दुखों से घिरा होता है, जो किसी से भी प्यार नहीं करता है उसे कोई संकट नहीं है।
- ◆ क्रोधित रहना, किसी और पर फेंकने के इरादे से एक गर्म कोयला अपने हाथ में रखने की तरह है, जो तुम्हीं को जलती है।
- ◆ *अपने शरीर को स्वस्थ रखना भी एक कर्तव्य है, अन्यथा आप अपनी मन और सोच को अच्छा और साफ नहीं रख पाएंगे।

कलयुगी भक्त

कानपुर में जॉनसन नामक एक व्यक्ति रहता था। वह कपड़े का व्यापार करता था। उनके घर एक पुत्र पैदा हुआ। जॉनसन साहब अपने पुत्र का नाम एंथोनी रखा। बचपन से वह बड़ा ही होनहार बालक था। उसका बचपन बड़े ही लाड़-प्यार में व्यतीत हुआ। बड़े होने पर एंथोनी की दोस्ती घुमक्कड़ बच्चों के साथ हो गई। एंथोनी कुसंगति में पड़ गया।

जॉनसन साहब एंथोनी को उच्च शिक्षा दिलाना चाहते थे। लेकिन एंथोनी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका तब जॉनसन साहब ने अपने पुत्र को अपने साथ व्यापार में लगा दिया। एंथोनी की शिक्षा दीक्षा भले ही उच्च न रही हो लेकिन वह इतना बुद्धिमान निकला की अच्छे-अच्छे को व्यापार में पानी पिला देता था। इस प्रकार बाप बेटा मिलकर अच्छी कमाई करने लगे।

अपने पुत्र की शादी भी कर दिए। उनका पूरा परिवार खुशी खुशी रहने लगा। लेकिन बहुत दिन बीत गए एंथोनी की पत्नी को कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ। वह बहुत निराश रहने लगी। समय के साथ-साथ जॉनसन साहब भी स्वर्ग सिधार गए। हमेशा दुखी रहने लगी एवं दिन रात रोते रहने के कारण उसकी आंखें भी खराब हो गईं। घर की सारी जिम्मेदारी एंथोनी के ऊपर आ गई। उधर पिता की छत्रछाया उठ गयी थी दुखों ने उस को चारों ओर से घेर लिया था। वह अपने आपको संभाल नहीं पा रहा था।

धीरे-धीरे ही सारा व्यापार चौपट हो गया और वह सड़क पर आ गया था। अब अपने दोस्तों के गैंग में शामिल हो गया और दोस्तों के साथ चोरी डकैती करने लगा। दिन में किसी जगह की रेकी करता और रात में घात लगाकर चोरी करने लगा। इस प्रकार अपने परिवार का पालन पोषण करने लगा। एक दिन रात में चोरी करने पहुंचा तो देखा कि वहां शिवजी के मंदिर में शिव पुराण की कथा चल रही है इस कारण उस एरिया में चारों ओर लोगों का आना जाना लगा हुआ है। इसका अर्थ था चारों ओर लोग जाग रहे हैं। चोरी के कार्य को अंजाम देने के लिए वह भी कथा वाले पंडाल में बैठ गया। रात के 1:00 बजे कथा समाप्त हुई तो सभी लोग अपने अपने घरों को चले गए।

शिवजी से उसने मन्नत मांगी अगर हमारे हाथ अच्छा धन दौलत लग जाए तो मैं यथाशीघ्र शिवपुराण की कथा का आयोजन अपने घर पर करूंगा। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह रही कि जिस दरवाजे पर चोरी करने पहुंचा वहां कोई द्वार पर घर की रखवाली करते हुए दिखाई दिया। एंथोनी की उस दिन कोई दाल नहीं गल रही थी। थक हारकर व भगवान शिव को कोसने के लिए पुनः उसी शिव मंदिर पर पहुंचा जहां बैठ कर उसने शिव की कथा सुन कर मन्नत मांगी थी।

एंथोनी शिव जी को कुछ कहता है इससे पहले ही उसने देखा कि एक 70 साल की बुढ़िया भगवान शिव को जल चढ़ाने के लिए पीतल का लोटा लेकर पूजा सामग्री के साथ मंदिर पहुंच गई थी तथा अपना पूजा अर्चना करने के बाद जब बुढ़िया घर जाने लगी तो वह उसे लेकर बुढ़िया से बड़े ही विनम्र भाव से कहा कि मुझे अपना पीतल वाला लोटा भगवान शिव जी को जल चढ़ाने के लिए दे दीजिए। भगवान शिव जी को जल चढ़ाने के बाद आपका लोटा वापस कर दूंगा।

बूढ़ी मां ने एंथोनी को जवाब के रूप में अपना सिर हिलाया एवं मंदिर में रुके रहने का आदेश दिया और खुद पीतल वाले लोटे में पानी भरकर ले आई तथा एंथोनी से बोली तुम मेरे साथ लोटे को पकड़ लो और मेरे साथ साथ जलाभिषेक भगवान शिव जी को करो। यहां बूढ़ी मां के पीतल का लोटा चुराने की युक्ति असफल होते देखकर एंथोनी बूढ़ी मां के साथ पीतल का लोटा स्पर्श किया तथा बुढ़ी मां के निर्देशानुसार पूरे विधि-विधान से शिवजी की पूजा की पूजा अर्चना पूरा होने दिया उसके बाद बूढ़ी मां ने एंथोनी को मंदिर के छत से बड़ा पीतल के घंटे को बजाने का आदेश दिया और बुढ़ी मां स्वयं अपना पीतल वाला लोटा लेकर अपने घर वापस चली गई।

एंथनी ऊपर छत से बने पीतल का घंटा जिसका वजन 5 किलो था देख कर बड़ा ही प्रसन्न हुआ। बूढ़ी मां को बहुत धन्यवाद दिया है। क्योंकि वह कलयुगी भक्त था और पहली बार मंदिर में पूजा-अर्चना किया था। एंथनी को पहली बार पता चला कि हिंदू मंदिरों में पांच पांच किलो वजन के पीतल का घंटा भी होता है।

सुबह के लगभग 4:00 बजे का समय हो चला था। वह घंटा चुराने की फितरत में शिवलिंग के ऊपर पैर रखकर घंटे से लटक गया। इतने में एक चमत्कार हो गया भगवान शिव जी का कैलाश पर्वत हिलने लगा और भगवान शिव जी की समाधि अचानक बंद हो गई। भगवान शिव जी ने अपना त्रिशूल संभाल लिया। मां पार्वती ने भगवान शिव जी से अचानक समाधि भंग होने का कारण पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि किसी वक्त को वरदान देने जा रहा हूँ। मां पार्वती ने तुरंत भगवान शिव से वचन ले लिया कि चाहे भक्त कितना भी बड़ा हो उसे केवल एक ही वरदान दूँगे।

भगवान शिव जी ने मां पार्वती को वचन दिया तथा एंथनी के समक्ष प्रस्तुत हो गए। उसे केवल एक वरदान मांगने का आदेश दिया। एंथनी के सामने तीन समस्याएं थी पहला एंथनी की मां अंधी हो चुकी थी वह उसे दिव्य दृष्टि दिलाना चाहता था। एंथनी की पत्नी ने निपूती थी उसे वह पुत्र दिलाना चाहता था। और स्वयं अमीर बनना चाहता था। लेकिन भगवान शिव जी केवल एक वरदान देने पर अड़े हुए थे।

काफी सोच विचार कर वह बोला हे नाथ यदि आप सच में हमारी तपस्या से प्रसन्न हैं तो मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि मेरी मां सोने के महल में सुंदर पोता-पोती देखें। भगवान शिव जी ने एवमस्तु कहकर अंतर्धान हो गए। भगवान शिव जी कैलाश पर्वत पर मां पार्वती जी के सम्मुख पहुंचे तो मां पार्वती ने भगवान शिव जी से यात्रा के बारे में कुशल मंगल पूछा। भगवान शिव ने जवाब दिया कि हे देवी आपने जो नियम सिद्धांत बताया था मैंने उसका मर्यादा पूर्वक पालन किया।

मां पार्वती भगवान शिव जी के वचन सुन कर बहुत प्रसन्न हो गई लेकिन मां पार्वती जी को यह अंदेशा नहीं था कि भारत सरकार नोटबंदी के दौरान ढाई लाख रूपय जमा करने पर पूछताछ नहीं करने का कानून बना दिया है तो यदि कोई व्यक्ति तीन बैंकों में खाता रखा है और सभी बैंकों में ढाई लाख करके 7.30 लाख रूपय जमा कराए तो बिना पूछताछ के पैसे जमा हो गए। लेकिन जिस दिन आरबीआई का गवर्नर केवल एक पैन कार्ड नंबर का प्रयोग करेगा तो कंप्यूटर नोटबंदी के दौरान जमा की हुई कुल सारे 7.5 लाख दिखाएगा फलस्वरूप आयकर विभाग के अधिकारी व्यक्ति के घर छापा मार देंगे। एक तीर से तीन निशाना लगेंगे। भारत वर्ष है यहां के नागरिकों को एक तीर से तीन निशाने लगाने में महारत हासिल है।

एंथनी ने अपने देश के नियम सिद्धांत का मर्यादा पूर्वक अक्षरशः से पालन करते हुए भगवान शिव के द्वारा दिए गए एक वरदान रूपी धनुष बाण से तीर निशाना साध कर भगवान शिव जी के द्वारा ली गई परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त किया। एंथनी द्वारा भगवान शिव जी से प्राप्त एक वरदान से ही तीनों समस्याएं हल हो गईं।

एंथनी की मां अंधी हो चुकी थी पोते नाती का दर्शन करके दिव्य दृष्टि प्राप्त कर लिया। इसकी पत्नी जो निपूती थी वह शिवजी के वरदान से पुत्रवती हो गई। एंथनी जो खुद गरीब हो चुका था वह स्वयं अमीर बनना चाहता था शिवजी के वरदान से सोने का महल प्राप्त कर लिया। मां पार्वती जी कैलाश पर्वत पर बैठकर सारा खेल देख रही थी वह समझ गई थी कि कलयुगी भक्त ने भोले बाबा को ठग लिया है एक वरदान के बहाने तीन वरदान हासिल कर लिया है।

गठिया का रोग



जनार्दन प्रसाद,
यातायात निरीक्षक
एवं योग प्रशिक्षु

आधुनिक चिकित्सा के अनुसार खून में यूरिक एसिड की अधिक मात्रा होने से गठिया रोग होता है। जैसे जैसे उम्र बढ़ती है गठिया की समस्या भी बढ़ती चली जाती है। भोजन में शामिल खाद्य पदार्थों के कारण जब शरीर में यूरिक एसिड अधिक मात्रा में बनता है तब गुर्दे उन्हें खत्म नहीं कर पाते और शरीर के अलग-अलग जोड़ों में यूरिक क्रिस्टल जमा हो जाता है और इसी वजह से जोड़ों में सूजन आने लगती है तथा उस सूजन में दर्द होता है।

गठिया का लक्षण-

गठिया के लक्षण पैरों और हाथों की उंगलियों में सूजन के रूप में देखे जाते हैं। गठिया के शुरूवाती दौर में शरीर के जोड़ों वाले हिस्सों में दर्द होने लगता है, और हाथ लगाने से भी दर्द होता है। गठिया के रोगियों को बुखार और कब्ज के साथ सिर दर्द भी होता रहता है। जोड़ों में अधिक सूजन और पीड़ा होती है। रोगी को अधिक प्यास लगती है। गठिया रोग में हाथ-पांवों में छोटी-छोटी गांठें बन जाती हैं और इलाज में देर होने से यह गंभीर रूप ले सकती है।

गठिया रोग का कारण-

- ज्यादा गुस्सा आने की प्रवृत्ति और ठंठ के दिनों में अधिक सोने की आदत से भी गठिया हो सकता है।
- भीतर में भय रहने के कारण भी पैर के जोड़ों में दर्द हो सकता है जो बाद में गठिया बन सकता है।
- फास्ट फूड, जंक फूड और डिब्बाबंद खाना खाने से भी गठिया रोग हो सकता है।
- वसायुक्त भोजन अधिक मात्रा में खाने से भी गठिया रोग हो सकता है।
- आलसी व्यक्ति जो खाना खाने के बाद श्रम नहीं करते हैं उन्हें भी गठिया की शिकायत हो सकती है।
- जिन लोगों को अजीर्ण की समस्या रहती है और अधिक मात्रा में खाना खाते हैं, इस वजह से भी गठिया रोग हो सकता है।

गठिया रोग का इलाज संभव है बस इन बातों पर आप ध्यान दें —

गठिया रोग का घरेलू उपचार-

- ⇒ अपने खान-पान पर नियंत्रण रखते हुए घरेलू चिकित्सा को अपनाने से गठिया रोग में लाभ मिलता है। रोज 1 से 2 हरड़ कूटकर उसका चूर्ण बनाकर इसे गुड़ के साथ खाएं।
- ⇒ गिलोय का रस पीने से गठिया रोग में सूजन और दर्द दूर होता है।
- ⇒ गठिया से प्रभावित लोग यदि समुद्र में स्नान करें तो उन्हें गठिया से राहत मिल सकती है।
- ⇒ जैतून के तेल की मालिश करने से गठिया के दर्द में राहत मिलती है।
- ⇒ तिल को तवे पर भूनने के बाद दूध के साथ पीसकर लेप बनायें और उसे गठिया से होने वाली सूजन पर इसका लेप लगाने से सूजन और दर्द में राहत मिलती है।
- ⇒ अलसी को दूध में पीसकर गठिया की सूजन से प्रभावित हिस्सों में लगाने से सूजन और दर्द में लाभ मिलता है। अदरक के सेवन से भी गठिया रोग कम होता है।
- ⇒ जिन लोगों को गठिया की शिकायत रहती है। वे पानी का सेवन ज्यादा करें। पानी पीने से गठिया का दर्द ठीक हो जाता है। और यह धीरे-धीरे पूरी तरह से यह समस्या ठीक हो सकती है।

गांधी

गांधी ने स्वतंत्रता की अलख जलाई !
आजादी का भी दर्श कराई !!
गांधी ने जोड़ा था देश को !
विकास मार्ग पर मोड़ा था देश को !!

गांधी का था सादा जीवन !
मानो जैसे हो संजीवन देश का !!
जनता हो रही थी उपेक्षित देश में!
लड़ पड़े गांधी अधनंगे वेश में !!

गांधी बने गरीब, पिछड़ों की भाषा!
हर जाति धर्म को दिया आसरा,
जीवन का भाव है गांधी !
सागर पार कराने की नाव है गांधी !!

अहिंसा का संदेश फैलाकर,
सत्याग्रहियों की भाषा है गांधी !
गागर में सागर है गांधी !!
निज देश के उत्थान में लड़े थे गांधी !

गांधी है गर्व भारत का !
गर्व से कहो ये शान हमारा !!
अंग्रेज डर कर भागे यहां से!
गांधी तो रहेगी हमारी जान में!!

रख लिया हिन्द देश का मान !
लौटाई गांधी ने उसकी की शान,
सदियों पुरानी गरिमामयी पहचान !!
गांधी जी है भारत की पहचान ।

पूजा धारिया



स्वच्छता

स्वच्छता पहले खुद अपनाना है
फिर सब को समझाना है
स्वच्छता की अपनी भाषा है
जन जन को यह सीख जाना है

स्वच्छता सबको प्यारी है
हर कर्म से यह न्यारी है
आओ इसको पहचाने हम
इसके वर्चस्व को माने हम

आस पड़ोस को स्वच्छ रखे हम
कूड़ा कचरा साफ करें हम
बिन इसके घर बार, व्यापार अधूरा
इसकी आदत से सबकुछ पूरा

यही संदेश बिखराना है
स्वच्छता को अपनाना है

—मोनिका कुमारी

पानी की कहानी



पानी के नीचे पानी है
पानी के ऊपर पानी है
पानी के अंदर पानी है
पानी के बाहर पानी है

पानी पानी चिल्लाता है
जिसको मिलता नहीं है पानी
पानी में वह चिल्लाता है
जिसको पीने लगता पानी

पानी जीवन पानी मरण है
पानी में भी कितना दम है
पानी की है अजब कहानी
ऊपर से नीचे तक है पानी

पानी ही पानी को बचाता
बिन पानी कुछ कौन है खाता
पानी की मर्यादा समझो
नहीं तो पानी हंसी उड़ाता

दलदल में पानी को देखो
हलचल में पानी को देखो
कोई पानी लूट रहा है
मखमल में पानी को देखो

मत पानी में नमक मिलाओ
पानी में ना गमक मिला
पानी अपनी ढक कर रखो
ना पानी में चमक मिलाओ

जीते पानी मरते पानी
पानी का भी देख तमाशा
पानी अगर सच्चा मिल जाए
तो झूठा है दूध बतासा

— नंदलाल प्रसाद आनंद

नेता बनो

नेता बनो गरीब का अगर सुख सारा है पाना
खाओगे तुम खोवा मलाई गरीब मरेगा बिन दाना

सदा ही उंची शान तुम्हारी नेता अफसर आगे पीछे
गरीब की लाश पर फूल चढ़ाना सारा जग तैरे पीछे

अमीर जनों में तेरी इज्जत हर पल होगा तेरा मान
मेरा देश की गरीबी मिटे न चाहे तैरे पूरे सब अरमान

नाम छपेगा प्रथम पृष्ठ पर तेरा भाषण बड़ा प्रबल
पुलिस, चमचा और अधिकारी सारे तैरे पीछे हर पल

गरीबी उन्मुक्ति आंदोलन चलाना है सारा जीवन
चाहे देश की जनता बेचारी सारा जीवन हो निर्धन

आदर्शवादिता स्पष्टवादिता वाक्पटुता सारे गुण
गरीब का होगा स्वात्मा कागज पर सारा मंथन । ।

-- — शैलेंद्र राम

चित्र वीथिका

दिनांक 16—31 अगस्त तक मालदा मंडल द्वारा पालित स्वच्छता पखवाड़ा—2017 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के दृश्य



छायाचित्र

मालदा मंडल द्वारा राजभाषा पखवाड़ा 2017 के दौरान आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मंडल रेल प्रबंधक ।

